कथावना | कहानियों और कहानी सुनाने के लिए अवसर तैयार करना

सोनिका पाराशर

बाल साहित्य (मौखिक, प्रदर्शनशील और लिखित) में बच्चों को आनन्द, कल्पना, भावनाओं, रचनात्मकता, जिज्ञासा, विभिन्न संस्कृतियों, भाषा के साथ खेलने, मानव जीवन के साथ सहानुभूति और स्वयं को समझने की दुनिया में ले जाने की क्षमता है।

–कथावना, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, 2023

बच्चे एक बड़े समूह में आए और मैंने उन्हें मेरे सामने आधे गोले में बैठने के लिए कहा। उनकी उत्साहित, चमकती आँखें मेरी ओर प्रतीक्षा से देख रही थीं। मैं धीरे-धीरे अपनी पीठ के पीछे छिपी हुई क़िताब को आगे ले आई। मैंने उन्हें कवर पेज दिखाया और एक नाटकीय अन्दाज़ के साथ चिल्लाई, "उस मगरमच्छ को पकड़ो!" मेरे सामने बैठा विद्यार्थियों का समूह हँसी से झूम उठा और मैं समझ गई कि शो शुरू हो गया है।

हमारे वार्षिक बाल साहित्य मेले, कथावना (KathaVana) में मैंने एक स्टॉल लगाया था, जिसमें ज़ोर-से पढ़कर (read-aloud) कहानी सुनाने (storytelling) की एक गतिविधि थी। ये बच्चे जो आए थे वे कन्नड़ा से परिचित थे और मैं केवल हिन्दी और अँग्रेज़ी जानती थी। इसलिए, मैंने जो अँग्रेज़ी में पढ़ा, एक सहकर्मी की मदद से उसका कन्नड़ा में अनुवाद किया गया। भाषा में अन्तर के बावजूद इशारों, अभिव्यक्तियों, आवाज़ की लयताल और अन्य पारभाषिक (paralinguistic) विशेषताओं के साथ ज़ोर-से पढ़ने से बच्चों द्वारा पर्याप्त रूप से समझपूर्ण, विचारशील और रोमांचक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं। उनकी आश्चर्यचकित होने, चौंकने, हँसने और उत्साहित प्रतीक्षा करने की सहज प्रतिक्रियाएँ सत्र की मुख्य आकर्षण रहीं।

कथावना क्या है?

कथावना एक वार्षिक, द्विभाषी, बाल साहित्य महोत्सव है, जो अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,बेंगलूरु द्वारा अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के कर्नाटक के फील्ड संस्थानों के साथ मिलकर आयोजित किया जाता है। यह विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक-आर्थिक और भाषायी पृष्ठभूमियों



चित्र-1 : *वार्षिक द्विभाषी बाल साहित्य महोत्सव, कथावना में बच्चे।*

के बच्चों के लिए साहित्य के उपयोग को सुलभ बनाने के लिए सरकारी और कम शुल्क वाले निजी स्कूलों के साथ काम करने की एक पहल है।

कथावना का प्रत्येक संस्करण कार्यशालाओं, चर्चाओं, मौखिक रूप से कहानी सुनाने, ज़ोर-से पढ़ने, कठपुतली शो, चित्रकार से मिलने और इसके आस-पास के अन्य कार्यक्रमों के साथ एक विषय पर आधारित होता है। पहले के कुछ विषय 'साहित्य में बच्चों की आवाज़', 'पाठकों के रूप में शिक्षक' और 'साहित्य के प्रति बच्चों की प्रतिक्रिया का पोषण' रहे हैं। यह उत्सव बच्चों की बाल साहित्य तक पहुँच और जुड़ाव को सक्षम बनाता है और उन्हें अपनी कक्षाओं में लौटने के बाद भी इसको जारी रखने के लिए प्रेरित करता है। शिक्षक यहाँ अवलोकन करके अपनी कक्षाओं में बाल साहित्य उपयोग के लिए कई विचारों और तरीक़ों को सीखते हैं।

कहानी सुनाना क्यों?

जब से मानव भाषा अस्तित्व में आई है, तब से *दास्तानगोई, हरिकथा कलाक्षेपम, यक्षगान, कावड, बुर्रा कथा, कठपुतली, रबाना छाया, थोलू बोम्मलता* जैसी विभिन्न मौखिक और प्रदर्शन परम्पराओं के माध्यम से कहानी सुनाना मानव जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा रहा है। इन मौखिक और प्रदर्शन परम्पराओं को अब वाज़िब तौर पर साहित्य के रूप में और दर्शकों-श्रोताओं के रूप में बच्चों के होते हुए प्रदर्शन करने पर बाल साहित्य के रूप में मान्यता दी जाती है।

कक्षा में कहानियों के उपयोग और कहानियों को कहने के कई फ़ायदे हैं, जिसके कारण वे कथावना का एक अभिन्न अंग बन गई हैं। इनमें से कुछ फ़ायदे इस प्रकार हैं -

अपने और दुनिया के बारे में सीखना

कहानी सुनाने की प्रक्रिया में बच्चों को अन्दर और बाहर देखने, पात्रों और घटनाओं के प्रति सहानुभूति रखने का मौक़ा मिलता है। बच्चे पात्रों के कार्यों के पीछे की भावनाओं, प्रतिक्रियाओं, रुचियों और प्रेरणाओं के प्रति जागरूक हो जाते हैं और अपने जैसी तथा अलग संस्कृतियों और लोगों से परिचित होते हैं। बच्चों के लिए, कहानियाँ न केवल कल्पना के लिए एक स्प्रिंगबोर्ड के रूप में कार्य करती हैं, बल्कि उन्हें काल्पनिक दुनिया को वास्तविक दुनिया से जोड़ने में भी सक्षम बनाती हैं। कहानी सुनाने की गतिविधि उन्हें अपने लिए महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर सोचने और विचारने के लिए एक मंच प्रदान कर सकती है और मानवता के लिए सार्वभौमिक विषयों पर ध्यान देने में उनकी मदद कर सकती है। इन सबसे ऊपर, एक कक्षा में कहानी सुनाने की प्रक्रिया एक साझा सामाजिक अनुभव बनती है, जिससे बच्चों का सामाजिक-भावनात्मक विकास होता है जहाँ वे हँसते हैं, चिन्ता करते हैं, उत्साहित महसूस करते हैं, दुखी हो जाते हैं या एक समूह के रूप में एक साथ उम्मीद करते हैं और इस प्रक्रिया में एक बेहतर समुदाय का निर्माण करते हैं।

विचार करना सीखना

कहानी सुनाने की प्रक्रिया बच्चों को सुनने, योजना बनाने, परिकल्पना करने, अनुमान लगाने, पैटर्न की पहचान करने और ध्यान देने की युक्तियों को विकसित करने में मदद करती है। वे अर्थ बनाने के लिए परोक्ष रूप से दृश्य और श्रव्य संकेतों का और दुनिया व भाषा के बारे में अपने पूर्व ज्ञान का उपयोग करना शुरू कर देते है।

भाषा सीखना

कहानी सुनाने में भाषा के समान पैटर्नों का अनुभव और उनकी बार-बार पुनरावृत्ति बच्चों को एक मौखिक और कथात्मक संवाद से परिचित कराती है, जिससे मौखिक भाषा का विकास होता है, जो साक्षरता और भाषा कौशल के विकास के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण है। शब्दावली, वाक्य संरचना, व्याकरण के नियम, उच्चारण, लय, सस्वर पाठ (intonation), बोध और विशेष सन्दर्भों में भाषा के उपयोग से भी बच्चों को परिचित कराकर इन पहलुओं को सुदृढ़ किया जा सकता है।

एक शैक्षणिक माध्यम के रूप में

कहानी सुनाने की गतिविधि गणित, विज्ञान, कला, प्रौद्योगिकी और सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या में विभिन्न अवधारणाओं को पेश करने और मज़बूत करने के लिए एक सन्दर्भ प्रदान कर सकती है, जिससे यह शिक्षकों के लिए एक बहुत ही उपयोगी शैक्षणिक माध्यम बन जाता है। यह पाया गया है कि कहानियाँ सुनना बच्चों और वयस्कों के लिए समान रूप से मज़ेदार और आनन्ददायक होता है। कहानी सुनाने की प्रक्रिया शिक्षकों को बच्चों की रुचियों और प्रेरणाओं के आधार पर कक्षा में उनकी भागीदारी और जुड़ाव की रणनीति बनाने का मौक़ा देती है। यह कक्षा में व्यक्तिगत असमानताओं, आवश्यकताओं और विविधता के लिए भी जगह बनाती है और शिक्षकों को इन पर प्रतिक्रिया देने में मदद करती है।

कक्षाओं में कहानी सुनाने की प्रक्रिया नदारद क्यों है?

कहानी सुनाने के शैक्षिक मूल्य के बावजूद, इसे अभी भी शिक्षकों के प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है क्योंकि उनमें से कई बच्चों के जीवन और सीखने में इसके उपयोग के वास्तविक मूल्य से अनजान हैं। यदि वे इसके महत्त्व को समझते भी हैं, तो वे उन तरीक़ों की पहचान करने के लिए संघर्ष करते हैं जिनमें कहानी सुनाना उनकी कक्षाओं और सीखने-सिखाने का हिस्सा बन सकता है। यह संघर्ष किसी पाठ की

योजना बनाने, पाठ्यचर्या की समय-सीमाओं का प्रबन्धन करने या कहानी सुनाने के लिए ऐसी सही प्रकार की पुस्तकों और परम्पराओं की पहचान करने के आस-पास हो सकता है जो उम्र और सीखने के स्तर के लिए उपयुक्त हों। कुछ शिक्षक कहानियाँ सुनाने या उन्हें ज़ोर-से पढ़ने की अपनी क्षमताओं में विश्वास की कमी के कारण भी कहानी सुनाने से बचते हैं।

कथावना ने कैसे मदद की है

कथावना ने पेशेवर विकास कार्यशालाओं और संवादों के माध्यम से सेवारत और सेवा-पूर्व शिक्षकों के साथ लगातार काम किया है। सिद्धान्त-व्यवहार जुड़ाव का इस्तेमाल करते हुए, शिक्षकों को व्यवस्थित रूप से बाल साहित्य को कक्षा में लाने के तरीक़ों से परिचित कराया जाता है, विशेष रूप से कहानी सुनाने के द्वारा। शिक्षकों के लिए कुछ मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार रहे हैं -

सीखना और बाल-केन्द्रित दृष्टिकोण

साहित्य के साथ बच्चों का जुड़ाव निष्क्रिय नहीं होना चाहिए, जहाँ कि शिक्षक कहानी सुनाते हैं, अनुवाद या सारांश द्वारा इसकी व्याख्या करते हैं और इसकी ‘सीख’ (moral) देते हैं। इसकी बजाय, बच्चों को अपने अर्थ बनाकर, अपनी व्याख्याओं, अनुमानों और भावनाओं को साझा करके और विभिन्न रचनात्मक तरीक़ों से प्रतिक्रिया देकर साहित्य के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने की आवश्यकता है। ऐसा होने के लिए, शिक्षकों को ऐसी कहानियों का चयन करने की आवश्यकता है, जिनमें कई व्याख्याएँ और अर्थ हों, जो विषयों में समृद्ध हों, बच्चों के जीवन और अनुभवों के साथ जुड़ती हों, बच्चों के लिए प्रासंगिक हों, उनकी रुचियों और ज़रूरतों को ध्यान में रखती हों। शिक्षकों के लिए यह भी ज़रूरी है कि वे सीखने के आयु उपयुक्त व व्यक्तिगत स्तरों के लिए अवसर दें और सुनिश्चित करें कि सत्र संवादपूर्ण हों और बच्चों की सोच एवं कल्पना का स्वागत करते हों। उदाहरण के लिए, एक कहानी सत्र में, स्टोरीटेलर मैत्री वासुदेव ने ऊरी ओर्लेव की “ग्रैनी निट्स” (Granny Knits) को ज़ोर-से पढ़ा, जिसका अनुवाद ईश्वरचन्द्र ने हिब्रू से कन्नड़ा में किया था। उन्होंने बच्चों को कल्पना करने, कहानी को उनके जीवन से जोड़ने, सोचने, विचारने और उनके अर्थों के साथ प्रतिक्रिया करने के लिए कुछ इस तरह के प्रश्नों के साथ एक चर्चा सत्र आयोजित किया, जैसे कि ‘अज्जी को कैसा लगा जब उनके पोते-पोतियों ने एक-दूसरे के ऊन के धागे निकाले? आपके माता-पिता/ दादा-दादी की क्या प्रतिक्रिया होती है, जब आप घर में कुछ तोड़ते हैं? कहानी में अज्जी की प्रतिक्रिया उनकी प्रतिक्रिया के समान थी या अलग थी? जब आपको ग़ुस्सा आता है तो आप क्या करते हैं? क्या आपका ग़ुस्सा अज्जी की तरह धीरे-धीरे, फूलते गुब्बारे की तरह बढ़ता है? या यह अचानक, एक फटते हुए गुब्बारे की तरह होता है?’

पाठ्यचर्या की अवधारणाओं का विस्तार और एकीकरण

कहानी सुनाने से अन्य गतिविधियाँ हो सकती हैं, विषयों का परिचय हो सकता है और अन्य पाठ्यचर्या क्षेत्रों में अवधारणाओं के शिक्षण में मदद मिल सकती है। स्टोरीटेलर वनिता ने एक कहानी प्रस्तुत की और इसका उपयोग, बच्चों को सहायक चित्रों के साथ एक एकॉर्डियन पुस्तक (accordion book) के रूप में अपनी कहानियाँ बनाने में मदद करने के लिए, एक प्रारम्भिक बिन्दु के रूप में किया। एक अन्य स्टोरीटेलर, प्रिया मुथुकुमार ने सामुदायिक सहायकों, विभिन्न क्षेत्रीय भोजन, प्रकृति और जानवरों के व्यवहार के विषयों के बारे में बात करने के लिए “हकीम्स हिकप्स” (Hakeem’s Hiccups), “बिसिबलेबाथ पॉट” (Bisibelebath Pot) और “द कैट एंड द फ्लाई” (The Cat and the Fly) जैसी कहानियों का उपयोग किया।

बहुविध उपयोग

कहानी सुनाने का एक बहुविध पहलू (multimodal aspect) है, जिसमें भूमिका-निर्वाह, वस्तुओं (props) और नाटक का उपयोग किया जा सकता है। इसे हमेशा केवल अपने हाव-भाव और शरीर की भाषा पर बहुत अधिक निर्भर नहीं रहना पड़ता है। आवाज़ के उतार–चढ़ाव और भावाभिव्यक्तियों में वस्तुओं और अन्य सामग्रियों का सहयोग लिया जा सकता है। उदाहरण के लिए, कुछ स्टोरीटेलर (उमाशंकर पेरिओडि, गगन येयादी और अन्विता प्रकाश) ने कहानियाँ सुनाने के लिए अन्य वस्तुओं - दुपट्टे, फर्नीचर, संगीत वाद्ययंत्र आदि के साथ कठपुतली का उपयोग किया। इससे बच्चों को अपनी ख़ुद की कठपुतलियाँ बनाने और उनके माध्यम से सीधे कहानियाँ कहने या उन्हें नाटकों में वस्तुओं के रूप में उपयोग करने के लिए प्रोत्साहन मिला।

द्वि/ बहुभाषी कक्षाओं का निर्माण

शिक्षकों ने बहुभाषी कक्षाओं को एक वास्तविकता बनाने के तरीक़े खोजना शुरू कर दिया है। एक द्विभाषी आयोजन होने के नाते, कथावना दर्शाता है कि कैसे कन्नड़ा और अँग्रेज़ी निर्बाध रूप से बातचीत का हिस्सा बन सकती हैं। हमारे पास ऐसे विद्यार्थी और सन्दर्भ व्यक्ति रहे हैं जो दो से अधिक भाषाओं के साथ सहज हैं, जैसे कि कन्नड़ा के अलावा हिन्दी या उर्दू में अच्छी-ख़ासी मौखिक भाषा की प्रवीणता और अँग्रेज़ी में शुरुआती स्तर की प्रवीणता रखते हैं।

सत्रों के दौरान इनमें से किसी भी या सभी भाषाओं में बातचीत को प्रोत्साहित किया जाता है। उदाहरण के लिए, शुरुआत में

मैंने जो उदाहरण साझा किया, उसमें हमारी बहुभाषी क्षमताओं का इस्तेमाल हुआ, जहाँ विद्यार्थियों ने कहानी को ज़ोर-से पढ़ने के दौरान मेरे संवादात्मक सवालों के जवाब कन्नड़ा, अँग्रेज़ी और उर्दू के मिश्रण में दिए। हम हाव-भाव और अभिव्यक्तियों का उपयोग करके अर्थ समझने में समर्थ थे। शुद्धता, प्रवाह या सटीकता को महत्त्व नहीं दिया गया था, बल्कि बच्चों द्वारा अपनी भाषा पर बिना किसी प्रतिबन्ध के अपनी व्याख्याओं, भावनाओं और विचारों को साझा करने पर महत्त्व दिया गया था। भाषा की यांत्रिकी की बजाय, बच्चे, उनके विचार और उनकी भाषा केन्द्र में थी। एक अन्य स्टोरीटेलर, अश्रुति सेवेंत्रा ने प्रोजेक्टर पर कन्नड़ा में पुस्तक को प्रदर्शित करते हुए अँग्रेज़ी में ज़ोर-से पढ़कर कुछ ऐसा ही किया। आगे की गतिविधि के लिए विद्यार्थियों को कहानी के आधार पर चित्र बनाने की आवश्यकता थी। विद्यार्थियों ने न केवल चर्चा में उनके प्रश्नों के उत्तर देते समय, बल्कि उनके चित्रों को नाम देने में भी कई भाषाओं का उपयोग किया।

भाषा का विकास

विशिष्ट शब्दावली का उपयोग; उच्चारण और लय के उतार-चढ़ाव का अभ्यास करने के अवसर; और मौखिक भाषा का विकास (विशेष रूप से नाटकों और भूमिका निर्वाह के माध्यम से प्रस्तुति की भाषा) कहानी सुनाने के सत्रों के आस-पास बुने गए - सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के भाषा कौशलों के विकास में मदद कर सकते हैं। इन्हें शामिल करने के कुछ तरीक़े हो सकते हैं - बच्चों को ख़ुद अपनी कहानी का अन्त बनाने, किसी कथानक के आधार पर कठपुतलियाँ बनाने और कहानी सुनने के बाद उसके कुछ हिस्सों को लिखने और अभिनय करने के लिए प्रोत्साहित करना।

स्थानीय परम्पराओं के साथ सम्बन्धों को खोजना

कथावना ने हमेशा हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत तथा मौखिक और प्रदर्शनशील साहित्य की परम्पराओं को महत्त्व दिया है। चूँकि यह कार्यक्रम कर्नाटक के सन्दर्भ में आयोजित किया जाता है, इसलिए प्रतिभागियों को यक्षगान को जानने का मौक़ा मिलता है और वे एक मौखिक और प्रदर्शन परम्परा के रूप में इसकी प्रासंगिकता को समझते हैं। शिक्षक यह पहचान पाए हैं कि कैसे रागिनी, हरिकथा, पट्टचित्र, ब्लावेली पाठन (blaveli reading), कावड, पावकथकली जैसी उनकी स्थानीय और सांस्कृतिक परम्पराओं को भी कक्षा में एक जायज़ उपस्थिति मिलनी चाहिए ताकि बच्चों को समुदाय और संस्कृति के साथ एक मज़बूत बन्धन बनाने और कक्षा के अन्दर और बाहर के अपने जीवन को जोड़ने में मदद मिल सके।

अन्त में

शिक्षकों के लिए कथावना की सबसे बड़ी उपलब्धि, यह स्वीकृति रही है कि बच्चे साहित्य के साथ जुड़ना पसन्द करते हैं। बच्चों ने पुस्तकों को गहराई से देखा है और संवादात्मक पठन-पाठन में प्रतिक्रिया करते हुए; नाटक, कठपुतली और यक्षगान के माध्यम से कहानियाँ सुनाते हुए; कविताएँ और कहानियाँ लिखते हुए; चित्रकारी और भूमिका निर्वाह करते हुए सक्रिय रूप से सत्रों में भाग लिया है।

बच्चों ने इन सत्रों के बाद भी इस कार्य को स्कूल या कक्षा के पुस्तकालय से क़िताबें लेकर जारी रखा। शिक्षकों को विद्यार्थियों की रुचि, भागीदारी और उनकी छिपी हुई प्रतिभा देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। इससे उन्हें विद्यार्थियों की ज़रूरतों और क्षमताओं को पूरा करने के लिए अपनी शिक्षण सामग्री और गतिविधियों को व्यवस्थित करने और भाषा पाठ्यचर्या और कक्षा में साहित्य को लाने में मदद मिली।

बच्चों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक स्थितियों की परवाह किए बिना, साहित्य तक उनकी पहुँच को मुमकिन बनाने के लिए, देश भर में विभिन्न भाषाओं में कथावना जैसे बाल साहित्य समारोहों की संख्या में वृद्धि करने की आवश्यकता है। यह आवश्यक है कि हम एक बच्चे के जीवन में बाल साहित्य और कहानी कहने की प्रासंगिकता को पहचानें और इन्हें भाषा पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र की रूपरेखा के अभिन्न अंग के रूप में शामिल करने के प्रयास करें।





चित्र-2-3 : कथावना के दौरान पढ़ने और अन्य गतिविधियों में तल्लीन बच्चे।

References

Azim Premji University. (2023). KathaVana: Annual bilingual children's literature festival. https://azimpremjiuniversity.edu.in/kathavana

Barone, D. M. (2011). Children's literature in the classroom. The Guilford Press

Bennett, S. V., Gunn, A. A. & Peterson, B. J. (2021). Access to multicultural children's literature during COVID-19. The Reading Teacher, 74(6), 785-796

Ellis, G. & Brewster J. (2014). Tell it again! The storytelling handbook for primary English language teachers. British Council

Huus, H. (1972). The role of literature in children's education. Educational Horizons, 50(3), 139-145

Williamson, P. M. (1981). Literature Goals and Activities for Young Children. Young Children, 36 (4), 24-30



सोनिका पाराशर अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में शिक्षक-शिक्षिका हैं। वे भाषा शिक्षा तथा पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र के कोर्स पढ़ाती हैं। उन्हें सेवा-पूर्व शिक्षक-शिक्षा, पाठ्यचर्या विकास, शिक्षा में भाषा, बाल साहित्य, पाठ्यचर्या के विभिन्न क्षेत्रों के शिक्षाशास्त्र और उनके एकीकरण, शिक्षा में कला, विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बच्चों को पढ़ाने और मार्गदर्शन तथा परामर्श देने का अनुभव और रुचि है। उनसे *sonika.parashar@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : जितेन्द्र 'जीत' **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय